



कर्नाटक सरकार

हिंदी सुमन

प्रथम भाषा हिंदी

Hindi First Language

Part - 2



चौथी कक्षा

Fourth Standard

Karnataka Text Book Society (R.)

6th Cross, Malleshwaram,
Bengaluru - 560 003.

अनुक्रमणिका



क्र.सं.	शीर्षक	विधा	पृष्ठ
10.	तरबूजों का मौसम	कविता	01
11.	घंटियाँ	कहानी	06
12.	जनसंचार माध्यम	निबंध	15
13.	एक नन्हा टुकड़ा बादल का	कविता	23
14.	पहिए की आत्मकथा	आत्मकथा	28
15.	आग की लपटों में	कहानी	35
16.	कबीर के दोहे	दोहा	43
17.	कृष्ण - सुदामा	एकांकी	46



तरबूजों का मौसम

- पूर्णिमा वर्मन

बच्चे विभिन्न फल तथा खाद्य पदार्थों से परिचित होते हैं।

गरमी के दिन धमा चौकड़ी
मस्ती हल्ला तुम-हम
आया फिर इस साल लौटकर
तरबूजों का मौसम।

दिन भर खेल-खेल कर थकते
रात गये सुस्ताते
लंबे-लंबे दिन होते और
छोटी-छोटी रातें
पढ़ने से फिर लंबी फुरसत
खरबूजों का मौसम
आया फिर इस साल लौटकर
तरबूजों का मौसम।

छोटो, काटो मिलकर बांटो
ठंडे-ठंडे खीरे
रंग-बिरंगे शरबत मीठे
पीते धीरे-धीरे
चना चबेना लइया सत्तू
भड़भूजों का मौसम
आया फिर इस साल लौटकर
तरबूजों का मौसम ।



कवयित्री परिचय :

पूर्णमा वर्मन का जन्म २७ जून १९५५ को पीलीभीत, उत्तरप्रदेश में हुआ। उन्होंने संस्कृत साहित्य में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की है। स्वातंत्र्योत्तर संस्कृत साहित्य पर शोध कार्य किया है। पत्रकारिता और वेब डिज़ायनिंग में डिप्लोमा भी प्राप्त की है।



पिछले पच्चीस सालों में लेखन, संपादन, फ्री लॉन्सर, अध्यापन, कलाकार, ग्राफ़िक डिज़ायनिंग और जाल प्रकाशन के अनेक रास्तों से गुज़रते हुए फिलहाल शारजाह नगर में साहित्यिक जाल पत्रिकाओं - 'अभिव्यक्ति' और 'अनुभूति' के संपादन और कला-कर्म में व्यस्त हैं। इसके अतिरिक्त वे हिंदी विकिपीडिया की प्रबंधक भी हैं।

दिल्ली में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद, साहित्य अकादमी तथा अक्षरम के संयुक्त अलंकरण, प्रवासी मीडिया सम्मान, जयजयवंती द्वारा जयजयवंती सम्मान तथा रायपुर में सृजन गाथा के हिंदी गौरव सम्मान से विभूषित हैं।

उनका कविता-संग्रह 'वक्त के साथ' प्रसिद्ध है।

शब्दार्थ:

हल्ला-शोर, मौसम-काल, फुरसत-अतिरिक्त समय, शरबत-मीठा पेय, चबेना-चबाकर खाने योग्य सूखा भुना हुआ चना, सत्तू - भुने हुए तरह-तरह के दालों का आटा, भड़भूजा - भट्टी लगाकर चना आदि भूनकर बेचनेवाला या उनकी जाति।

अभ्यास

I. इन प्रश्नों के उत्तर लिखो :

१. इस साल फिर से क्या लौटकर आया है?
२. दिन और रात कैसे होते हैं?
३. किस प्रकार के शरबत को धीरे-धीरे पीते हैं?

II. नमूने के अनुसार रेखा खींचकर शब्दों को मिलाओ :

- | | |
|----------|----------|
| १. मस्ती | काल |
| २. हल्ला | मीठा पेय |
| ३. शरबत | नशा |
| ४. मौसम | शोर |
-

III. इन शब्दों के अर्थ लिखो :

१. साल -
२. फिर -
३. लौटना -
४. मौसम -
५. थकना -
६. फुरसत -

IV. इन शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो :

१. लंबे-लंबे -
२. छोटी-छोटी -
३. ठंडे-ठंडे -
४. धीरे-धीरे -

V. इन पंक्तियों को पूरा करो :

१. गरमी के दिन धमा चौकड़ी

आया फिर _____

_____ मौसम।

२. दिन भर _____

रात गये सुस्ताते

_____ होते और

पढ़ने से फिर लंबी फुरसत

तरबूजों का मौसम ।

VI. इन पंक्तियों का अर्थ लिखो :

मस्ती हल्ला तुम-हम।

रात गये सुस्ताते।

रंग-बिरंगे शरबत मीठे।

तरबूजों का मौसम।

VII. नया शीर्षक :

अगर तुम्हें इस कविता का नाम बदलने को कहा जाए, तो तुम इसे क्या नाम दोगे? लिखो ।

योग्यता विस्तार :

- यहाँ लिखे गये फलों में से तुम्हें कौन से फल पसंद हैं? तुम किन-किन फलों से शरबत बनाते हो? सूची बनाओ।

१. तरबूज

५. संतरा

२. खरबूज

६. जामुन

३. सेब

७. अंगूर

४. केला

८. अनार





- संकलित

बच्चे समय का महत्व समझकर उसका सदुपयोग करना सीखते हैं।

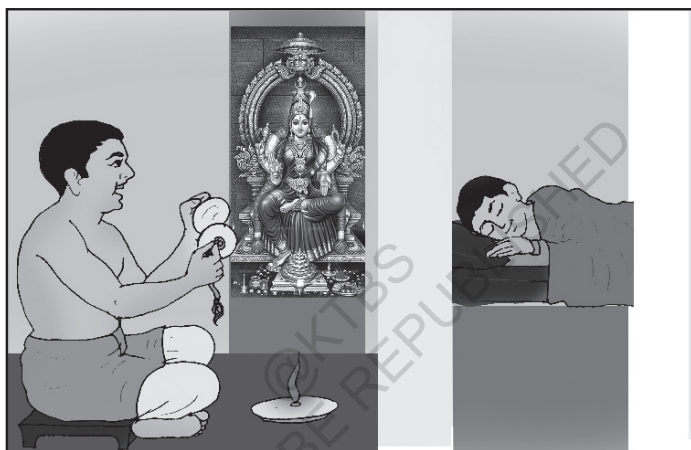
“टिर्न....टिर्न....टिर्न....टिर्न....”

प्रकाश खीझकर उठा और टाइम पीस को तकिए के नीचे दबाकर लेट गया; कानों के इर्द-गिर्द रज़ाई अच्छी तरह लपेट ली, जिससे घंटी की आवाज़ बिल्कुल न सुनाई दे। पर नींद उचट चुकी थी। मन ही मन अपनी दीदी को कोसने लगा, जो रोज़ रात को उसे सुबह उठकर पढ़ने की शिक्षा देती है। न जाने किस वक्त वह चुपके से घड़ी में अलार्म लगाकर रख जाती है और प्रकाश को मजबूर होकर उठना ही पड़ता है।



अभी शायद पौ फटी होगी कि कमरे के बाहर दीवार पर लगी कॉल बेल बज उठी। प्रकाश चिहुँक उठा। उसने सोचा कि इस कॉल बेल को भी वह आज उखाड़कर फेंक देगा। इस रामू के बच्चे को कितनी बार समझाया कि दूधवाले के आने से पहले ही उठकर दरवाज़े पर खड़ा हो जाया कर, पर यह भी कॉल बेल बजने पर ही उठता है। प्रकाश को लगा जैसे सब लोग हाथ धोकर उसके पीछे पड़ गए हैं।

किसी तरह इधर-उधर करवट बदली कि तब तक पिताजी ने अपना जाप शुरू कर दिया, “हरे कृष्ण गोविंद हरे मुरारे”। उन्हें भी न जाने क्या आदत है जो मुँह अंधेरे ही उठकर नदी-स्नान को चले जाते हैं और आकर भजन-पूजन में लग जाते हैं। प्रकाश को उनके भजन-पूजन से चिढ़ नहीं है, चिढ़ है उस गिलास के साइज़ की घंटी से, जिसे वह ज़ोर-ज़ोर से हिलाकर भजन गाते हैं। समझ में नहीं आता कि क्या भगवान भी बिना घंटी बजाए नहीं जागते!



आज सुबह से ही प्रकाश झुंझलाया हुआ था। दीदी ने पूछा, “सुबह उठे थे?”

वह बरस पड़ा, “दीदी, मैं अब इतना छोटा नहीं हूँ कि मुझे तुम रोज़-रोज़ एक ही बात कहो।”

इस उत्तर से दीदी का नाराज़ हो जाना स्वाभाविक ही था। वह बिना उनकी ओर देखे बाथरूम में चला गया।

खाना खाकर जैसे ही वह किताबें इकट्ठी करने लगा कि बैठक में लगी दीवाल घड़ी उसे ही सुनाने के लिए दस का घंटा बजा बैठी। उसका मूड फिर बिगड़ गया। आज फिर पहले पीरियड में लेट पहुँचने पर शास्त्री जी अपनी गोल-गोल आँखों से उसे घूरेंगे, न जाने क्यों वह समझने की कोशिश नहीं करते कि देर-सबेर तो सभी के

साथ होती है।

वह साइकिल पर सवार होकर चला जा रहा था कि झट गाँव का एक आदमी उसके सामने आ गया। बड़ी मुश्किल से वह कतराकर साइकिल निकाल ले गया, पर उसकी कुहनी गाँववाले से टकरा गई।

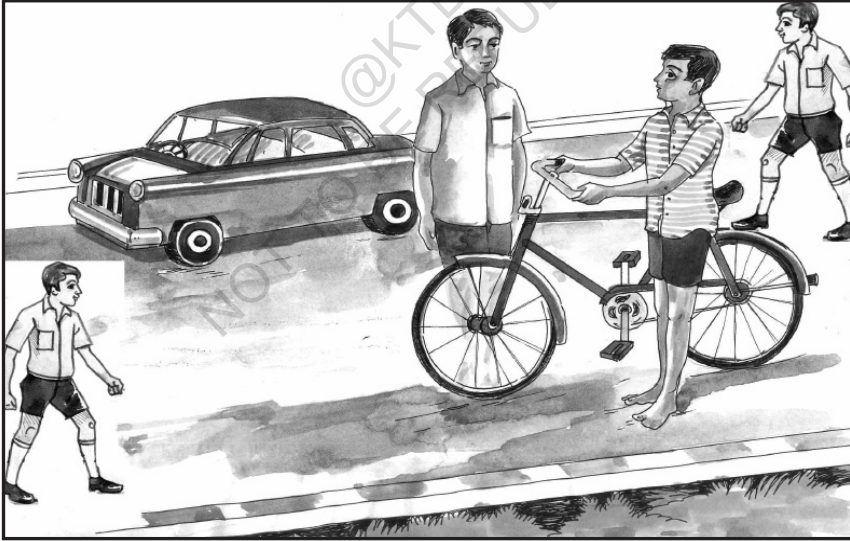
“दिखाई नहीं देता क्या?” गाँववाला बड़बड़ाया।

“तुम्हें नहीं दिखाई देता और मुझे कहते हो”

“क्या मेरे पीछे आँखें हैं? साइकिल में घंटी क्यों नहीं लगवा लेते? उसे बजा दो, तो सामनेवाला हट जाए।”

और प्रकाश तेजी से पैडल घुमाता आगे निकल गया। गाँव वाले के मुँह से भी घंटी का नाम सुनकर उसका जी चाहा था कि उसका मुँह नोच ले।

रास्ते में कुछ दोस्त मिल गए।



उनके साथ भी दस-पंद्रह मिनट लग गए। स्कूल पहुँचा, तो मनकीराम चपरासी दूसरे पीरियड का घंटा बजा रहा था। उसे लगा कि यह चपरासी भी उसका शत्रु है। ज़रूर उसने उसे देखकर ही

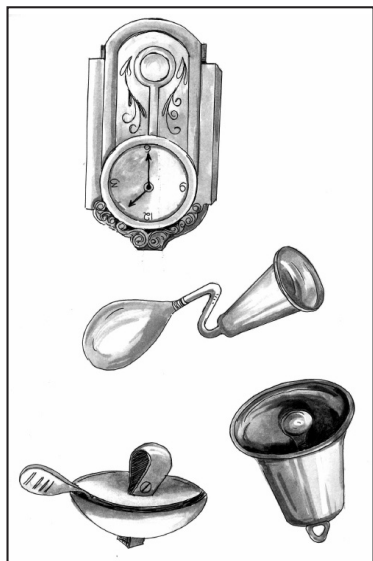
घंटा बजाया है और फिर कम्बख्त बजाता भी कितनी जोर से है जैसे सभी बहरे हों।

क्लास में पहुँचा, तो भटनागर साहब नहीं आए थे। उन्हें शायद प्रयोगशाला में होकर आना था। वह आए, तो हाथ में पीतल की एक घंटी लेकर आए। आज 'ध्वनि' के संबंध में पाठ था। पूरे पीरियड में वह धातु तथा उस पर किए जानेवाले आघात के कारण होनेवाली ध्वनि तथा उसके कंपनों की भौतिक-शास्त्रीय जानकारी देते रहे और प्रकाश अपना माथा पकड़े बैठा रहा। बीच-बीच में जब वह उदाहरण देने के लिए टन् से घंटी बजाते, तो वह चौंक उठता, जैसे किसी ने उसकी कनपटी पर चाँटा मारा हो और वह तिलमिला कर रह जाता।

पूरा दिन उसने कैसे बिताया, उसकी खुद समझ में नहीं आया। सातवें पीरियड की प्रतीक्षा ही उसका एकमात्र सहारा थी। पर सातवाँ पीरियड जैसे रबड़ बन गया था। वह बार-बार कलाई-घड़ी की सुइयों को देखता। कभी सोचता शायद हैड मास्टर के कमरे की घड़ी ठीक नहीं है। शायद मनकीराम ऊँघ रहा होगा। किसी तरह ज़ोर-ज़ोर से टन्न्....टन्न्....टन्न्.... छुट्टी की घंटी बजी, तो उसे चैन मिला कि चलो अब यहाँ की घंटी से मुक्ति मिली।

घर वापस जाते समय उसे लगा कि बड़ी ज़ोर-ज़ोर से घंटियाँ बजाती हुई कुछ मोटर गाड़ियाँ पीछे से आ रही हैं। वह एकदम सड़क छोड़कर किनारे हो गया। देखा कि एक के पीछे एक, तीन फायर-ब्रिगेड की गाड़ियाँ चली आ रही हैं। उनकी घंटियाँ ज़ोरों से बज रही हैं। लोग उधर ही भाग रहे हैं जिधर वे जा रही हैं, किन्तु जब फायर-ब्रिगेड की गाड़ियाँ उसके करीब से गुज़रीं, तो इतनी तेजी से घंटियों का स्वर उसके कानों में घुसा कि उसका मस्तिष्क सुन्न पड़ गया। उसे पल भर के लिए लगा कि वह बहरा हो गया है। भारी मन से वह धीरे-धीरे घर की ओर चला। चाहता तो था कि उधर चलकर देखे कि आग कहाँ लगी है, पर सिर फटा जा रहा था। घंटियों की आवाज़ों ने जैसे उसके दिमाग में पंकचर कर दिया था।

घर पहुँचा, तो उसकी आँखें बुरी तरह जल रही थीं। दीदी ने माथे पर हाथ रखा, तो बुखार से वह तप रहा था। फौरन प्रकाश की बीमारी का समाचार घर में फैल गया। माँ ने आकर उसे बिस्तर पर लिटा दिया और उसका सिर सहलाने लगी। पिताजी ने थर्मामीटर लगाकर देखा तो बुखार चार को पार कर पाँच डिग्री को छूना चाहता था। दीदी ने तुरंत पड़ोस में जाकर डॉक्टर को आने के लिए फोन कर दिया।



प्रकाश अपनी सारी सुधबुध खो बैठा था। तेज बुखार में वह हाथ-पैर पटक रहा था। बीच-बीच में बड़बड़ा उठता, “घंटी.... घंटी.... घंटी.... बजी.... बंद करो, उसे.... बंद करो..... दीदी..... अलार्म..... मनकीराम भटनागर साहब.... घंटी.... घंटी...।”

डॉक्टर ने देखा। दवा दी। फिर बोले, “लगता है, यह किसी बात से परेशान है। यह ‘घंटी-घंटी’ क्यों चिल्ला रहा है?”

“डॉक्टर, मैं इसे सुबह उठाने के लिए अलार्म लगाती हूँ। यह उठना नहीं चाहता। इसे घंटियों से ही न जाने क्यों चिढ़ हो गई है। सुबह दूधवाला घंटी बजाता है, तब भी रामू पर बिगड़ता है कि दूधवाले से पहले ही जाकर दूध क्यों नहीं ले लिया। बताइए डॉक्टर, भला घंटी भी कोई ऐसी चीज़ है जिससे चिढ़ा जाए?” दीदी ने कहा।

डॉक्टर गंभीर होकर कुछ सोचते रहे। इस बीच प्रकाश उसी तरह बड़बड़ाता रहा। डॉक्टर उठे और पिताजी को बाहर ले गए। पता नहीं क्या बातें कीं।

प्रकाश का बुखार उतरा, तो पिताजी ने कहा, “बेटे, आज स्कूल मत जाना, हम लोग शाम को कहीं बाहर चलेंगे।”

और शाम की गाड़ी से सभी लोग शिमला चले गए। उन्होंने एक ऐसा बंगला लिया, जो बिल्कुल शहर के किनारे पर था। बिल्कुल सुनसान, कहीं कोई आवाज़ नहीं, दिन-भर, रात-भर सब उसीमें रहे।

प्रकाश यहाँ एक हफ्ते में ही ऊब गया। सभी बातों का क्रम बिगड़ गया था। कभी शाम को ही खाना हो जाता, कभी देर रात तक बातें होती रहतीं। पिताजी जान-बूझकर कलाई-घड़ी घर पर छोड़ आए थे। कुछ समझ में ही नहीं आता था कि कब कितना बजा है। प्रकाश को लगने लगा कि वह जैसे ढीला हो गया है और सब कुछ बेवक्त करता है।

आखिर तंग आकर एक दिन वह बोला, “यहाँ से चलिए, पिताजी, मन नहीं लगता। कब क्या करूँ, कुछ समझ में नहीं आता!”

पिताजी मुस्कराए। बोले, “तबीयत तो ठीक है?”

“हाँ,” प्रकाश ने कहा, “पर लगता है अगर ऐसे ही रहा, तो फिर बीमार हो जाऊँगा। यहाँ तो कुछ काम ही नहीं है।”

“इसीलिए आदमी के लिए यह बहुत ज़रूरी है कि वक्त की कीमत को पहचाने। कब क्या करना चाहिए, कितनी देर में करना चाहिए, यह जानना बहुत ज़रूरी है। अगर आदमी यह जानना बंद कर दे, तो उसकी ज़िंदगी का कोई ठिकाना नहीं कि वह कब क्या करेगा। छोटी-छोटी चिड़ियों को देखो, वे भी समय से उठती और सोती हैं। आदमी ने अपने समय का हिसाब रखने के लिए घड़ियाँ बनाई हैं और समय से सजग रहने के लिए घंटी बजती है। जो तुम्हें चेतावनी दे, सजग बनाए, उससे चिढ़ना कैसा? अगर तुम नहीं चाहते, तो तुम उसे मिटा सकते हो, पर यह तो सोच लो कि क्या उसके बिना तुम रह सकते हो?” पिताजी ने समझाया।

प्रकाश ने उत्तर में मुस्करा दिया। बोला, “पिताजी, अब मैं खुश हूँ। मेरी तबीयत भी अच्छी है। चलिए घर चलें, वरना पढ़ाई का बहुत नुकसान होगा।”

और प्रकाश लौट आया। घंटियाँ पहले जैसी ही बजती रहीं, पर प्रकाश अब उनसे चिढ़ता नहीं, खुश होता है - यह सोचकर कि वे उसे पढ़ने के लिए कहती हैं, वे उसे लेट होने से बचाती हैं।



शब्दार्थ:

ईर्द-गिर्द - आस-पास, चारों ओर; उचट जाना-अलग होना, चिहुँकना-चौंकना, उखाड़ना-छिन्न-भिन्न करना, निकाल फेंकना; झुंझलाना - चिढ़-चिढ़ाना, दीवाल-दीवार, आघात-धक्का, चोट; तिलमिलाना-चकाचौंध होना, मस्तिष्क-भेजा, दिमाग; परेशान-चिंतित होना, बड़बड़ाना-व्यर्थ की बात करना, सुनसान-निर्जन, सन्नाटा, उजड़ा; बेवक्त-असमय, चेतावनी-सावधान करना, तबीयत-स्वास्थ्य, नुकसान-हानि, चिढ़ना-बुरा मानना, क्रोधित होना।

अभ्यास

I. प्रश्नों के उत्तर बताओ :

१. प्रकाश को मजबूर होकर सुबह क्यों उठना पड़ता था?
२. पिताजी ने प्रातःकाल कौन-सा जाप शुरू कर दिया?
३. घर वापस जाते समय प्रकाश ने क्या देखा?
४. प्रकाश को किस वस्तु से चिढ़ हो गई थी ?
५. पिताजी ने प्रकाश को क्या समझाया?

II. इन प्रश्नों के उत्तर लिखो:

१. किसकी नींद उचट चुकी थी?
२. कमरे के बाहर दीवार पर क्या लगी थी?
३. प्रकाश किस चीज़ से चिढ़ रहा था?
४. मुँह अंधेरे उठकर नदी-स्नान के लिए कौन चले जाते हैं?

५. खाना खाकर प्रकाश क्या इकट्ठा करने लगा?
६. जब प्रकाश साइकिल पर सवार होकर चलने लगा तो कौन सामने आया?
७. भटनागर जी के हाथ में किस प्रकार की घंटी थी?
८. भटनागर जी किसकी जानकारी देते रहे?
९. घर वापस जाते समय प्रकाश ने क्या महसूस किया?
१०. किसने प्रकाश को बिस्तर पर लिटा दिया?
११. तेज बुखार में प्रकाश क्या कर रहा था?
१२. डॉक्टर ने दवा देकर क्या कहा?

III. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखो:

१. प्रकाश मन ही मन अपनी दीदी को कैसे कोसने लगा?
२. पिताजी प्रातःकाल क्या-क्या करते हैं?
३. जब कॉल बेल बज उठी तो प्रकाश ने क्या-क्या सोचा?
४. कक्षा में प्रकाश अपना माथा पकड़े बैठा था। क्यों?
५. गाँववाले ने प्रकाश से घंटी के बारे में क्या कहा?

IV. वाक्य में प्रयोग करो:

१. हाथ धोकर पीछे पड़ना -
२. सुधबुध खो बैठना -
३. मुँह नोचना -

V. अनेकार्थ शब्दों का प्रयोग:

घर पहुँचा, तो उसकी आँखें बुरी तरह जल रही थीं।
 यहाँ जल का अर्थ है जलना।
 इसी तरह जल का अर्थ पानी भी होता है।
 जैसे-वह जल भर कर लाया ।

नीचे कुछ शब्द दिये गये हैं। इन शब्दों से एक-एक वाक्य बनाओ, लेकिन दोनों बार उस शब्द का अर्थ अलग होना चाहिए।

१. हार -
२. फल -
३. मगर -
४. उत्तर -

VI. द्विरुक्ति शब्दों का प्रयोग:

वह धीरे-धीरे घर की ओर चला।

यहाँ 'धीरे' शब्द का दो बार प्रयोग किया गया है। ऐसे ही और कुछ शब्द नीचे दिये गये हैं। उनसे वाक्य बनाओ:

१. चलते-चलते -
२. पीछे-पीछे -
३. आगे-आगे -

VII. कोई और शीर्षक :

इस कहानी का नाम घंटियाँ क्यों है?

तुम इसे क्या शीर्षक देना चाहोगे? लिखो।

- १.
- २.

योग्यता विस्तार :

- 'समय की पहचान' - इस विषय के बारे में अपने दोस्तों के साथ चर्चा करो और उसके महत्व को जानो।





जनसंचार माध्यम

- संकलित

बच्चे जनसंचार माध्यम के विभिन्न साधनों और उनकी उपयोगिता से परिचित होते हैं।

वैज्ञानिकों ने अद्भुत साधनों का आविष्कार किया है। इन साधनों से हमें अनेक लाभ होते हैं। हम कुछ ही मिनटों में अनेक घंटों के काम-काज कर लेते हैं।

रेडियो

२४ दिसंबर १९०६ की शाम को सबसे पहले रेडियो का प्रसारण आरंभ हुआ। रेगिनाल्ड फेसेंडन ने इस प्रसारण के लिए वायलिन बजाया। इसे अटलांटिक महासागर के जहाजों के लोगों ने सुना। इससे पहले जगदीशचंद्र बोस और इटली के मार्कोनी ने ई. १९०० में इंग्लैंड से अमरीका तक बेतार यंत्र से अपने संदेशों को भेजा था। इसके उपरांत दो वैज्ञानिकों ने और भी काम किया। इनका नाम है 'लीद फोरेस्ट' और 'चार्ल्स हेराल्ड'।



ई. १९१८ में लीड फोरेस्ट ने न्यूयार्क के हाईब्रिज नामक जगह पर रेडियो स्टेशन की स्थापना की। कुछ ही सालों में रेडियो स्टेशन दुनिया भर में खुल गये। नवंबर १९४१ को सुभाषचंद्र बोस ने रेडियो से भारत को संबोधित किया। ई. १९३६ में भारत इंपीरियल रेडियो ऑफ इंडिया नामक स्टेशन शुरू हुआ। आगे चलकर यही स्टेशन ऑल

इंडिया रेडियो बन गया। आजकल रेडियो स्टेशन को आकाशवाणी कहते हैं।

मुद्रण

आजकल छपाई का व्यापक उपयोग हो रहा है। कहा जाता है कि इस तकनीकी का जन्म पूर्वी एशिया में हुआ। कागज़ और कपड़े पर छपाई करने की कोशिशें हुईं। चीन देश के 'हान' नायक राजवंशजों ने कागज़ पर छपाई का आरंभ किया। सातवीं शती तक मुद्रण का उदाहरण चीन का ही मिलता है। नौवीं और दसवीं शती तक इस तकनीकी की वृद्धि हुई।

ई. १३०० में यूरोप में कपड़ों पर छपाई हो रही थी। इसे धार्मिक कारणों के लिए किया जाता था। ई. १४०० तक कागज़ का संशोधन हुआ था। उस पर मुद्रण आसानी से होने लगा। ई. १४२५ तक इसका बहुमुखी विकास हुआ। समाचार पत्र, पत्रिकाएँ इस माध्यम के प्रमुख अंग हैं।

टेलीविज़न

जान लोगी बेयर्ड ने ई. १९२४ में टेलीविज़न का आविष्कार किया। यह स्काटलांड देश का निवासी था। इसने ई. १९२५ में मनुष्य की मुखाकृतियों का प्रसारण किया। टेलीविज़न अत्यंत रोचक साधन है। यह दुनिया भर के किसी भी वस्तु, व्यक्ति या जगह को हू-ब-हू दिखाता है। सबसे पहले काले-सफ़ेद रंगों में सभी कार्यक्रम प्रसारित होते थे। आजकल विभिन्न रंगों में प्रसारित हो रहे हैं। यह चित्रों सहित ध्वनियों को भी प्रसारित करता है।



भारत में टेलीविज़न का प्रसारण ई. १९२९ सितंबर १५ को हुआ। इन दिनों यह व्यापार का सशक्त साधन बन गया है। मनोरंजन टेलीविज़न का प्रधान कार्य है। 'टेली' का अर्थ है 'दूर'। 'विज़न' का अर्थ है 'दृष्टि'। इसके द्वारा हज़ारों मील दूरी पर स्थित दृश्यों को देखते-देखते विवरण को भी सुन सकते हैं।

कंप्यूटर

कंप्यूटर एक अद्भुत मशीन है। यह इलेक्ट्रॉनिक मशीन है। इसमें बहुत ही शीघ्र गणितीय काम कर सकते हैं। किसी भी विचार को तर्क संगत पा सकते हैं और जाँच-पड़ताल भी कर सकते हैं। यह कंप्यूटर विचारों को अपने स्मृति-भंडार (Memory) में रख लेता है। हम अपनी आवश्यकता के अनुसार इसका उपयोग कर सकते हैं।



इसका दिमाग है सी.पी.यू.। इसे कंट्रोल प्रोसेसिंग यूनिट कहते हैं। चार्ल्स बाबज ने इसका निर्माण किया। सबसे पहले यह कंप्यूटर बड़े कमरे की तरह था। आजकल यह मोबाइल जैसे अत्यंत छोटे रूप में भी प्राप्त होता है।

इंटरनेट

इंटरनेट को नेट भी कहते हैं। दुनिया के सभी कंप्यूटरों से यह इंटरनेट आपस में संपर्क करा सकता है। दुनिया भर के देशों में हम इसके द्वारा विचारों को भिजवा सकते हैं। यू.एस.ए. में 'एडवान्स रीसर्च प्राजेक्ट एजेन्सी' है। इस संस्था ने ई. १९६९ में इंटरनेट का आविष्कार किया।

आजकल करोड़ों लोग इंटरनेट का उपयोग कर रहे हैं। इससे किसी भी व्यक्ति, वस्तु, जगह, नदी, पर्वत, समुंदर के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। निश्चित पता कंप्यूटर की स्क्रीन पर दिखता है, जिस पर क्लिक करने से वह पेज खुल जाता है। इसे 'वेब ब्राउसिंग' कहते हैं। 'ब्राउस' का अर्थ है 'ढूँढ़ना'।

'ई-मेल' इलेक्ट्रॉनिक मेल है। मेल का अर्थ है 'डाक'। किसी भी देश में बैठकर ई-मेल भेज सकते हैं। यह इंटरनेट का प्रमुख भाग है।

मोबाइल फोन

मोबाइल फोन को सेलफोन, सेल्युलर फोन अथवा हैंडफोन कहते हैं। इसे सेल्युलर नेटवर्क से चलाया जाता है। इस फोन का आविष्कार 'मार्टिन कूपर' ने किया।



सर्वप्रथम मोबाइल फोन से ई. १९४६ जून १७ को कॉल किया गया। यह कॉल 'सेंट लूयिस' और 'मिस्सूरी' के बीच हुआ। यह जगह यू.एस.ए. में है। घर में बैठ-बैठे लोगों ने आपस में बातें की। इस फोन के अनेक उपयोग हैं। इसमें फोटो खींचे जाते हैं, वीडियो बातें होती हैं, सीधे ई-मेल भेज सकते हैं और प्राप्त भी कर सकते हैं; रेडियो भी सुन सकते हैं। इस फोन में आजकल और भी अनेक सुविधाएँ हैं।



शब्दार्थ:

बेतार-जिसमें तार न हो, छपाई-मुद्रण, शती-एक सौ वर्ष का समय, आविष्कार-खोज, आसानी-बिना कष्ट के, आपस में-एक दूसरे से, परस्पर।

अभ्यास

I. एक वाक्य में उत्तर लिखो:

१. रेडियो प्रसारण का आरंभ कब हुआ?
२. किन्होंने बेतार यंत्र से इंग्लैंड से अमरीका तक संदेश भेजा था?
३. मुद्रण तकनीकी का जन्म कहाँ हुआ था?
४. ई. १३०० में किस पर छपाई हो रही थी?
५. टेलीविज़न का आविष्कार किसने किया?
६. सबसे पहले टेलीविज़न पर किन रंगों में प्रसारण हो रहा था?
७. भारत में टेलीविज़न का प्रसारण कब हुआ?
८. कंप्यूटर के दिमाग को क्या कहते हैं?
९. इंटरनेट का आविष्कार किसने किया?
१०. इंटरनेट क्या काम करता है?
११. 'ब्रौस' का अर्थ क्या है?
१२. सर्वप्रथम मोबाइल फोन से कब कॉल किया गया?

II. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखो:

१. भारत में रेडियो स्टेशन कब शुरू हुआ? आजकल इसे क्या कहते हैं?
२. चीन देश के किस राजवंशजों ने छपाई का प्रारंभ किया और कब तक मुद्रण का उदाहरण मिलता है?
३. यूरोप में किन कारणों से छपाई हो रही थी और इसका कहाँ तक विकास हुआ?

४. जान लोगी बेयर्ड किस देश का निवासी था? इसने टेलीविज़न से किसका प्रसारण किया?
५. टेली और विज़न का क्या अर्थ है? टेलीविज़न का क्या उपयोग है?
६. कंप्यूटर से क्या-क्या काम कर सकते हैं?
७. इंटरनेट के उपयोग के बारे में लिखो।
८. मोबाइल फोन का आविष्कार किसने किया? इसे कैसे चलाया जाता है?
९. मोबाइल फोन से क्या-क्या लाभ होते हैं?

III. पत्र-पत्रिकाएँ :

तुम प्रतिदिन दैनिक पत्रिकाओं को पढ़ते हो। इन्हें समाचार पत्र भी कहते हैं। पत्रिकाओं को पढ़ने से सामान्य जानकारी बढ़ती है। समाज, व्यक्ति, पुस्तकें, पेड़, पहाड़, पर्वत, पशु-पक्षियों के संबंध में लेख छपे होते हैं। बाल-साहित्य संबंधी कोई छोटी-सी कहानी पढ़ो और लिखो।

IV. शब्द-युग्म

देखते-देखते, चलते-चलते, इन शब्द-युग्मों को पढ़ो। इनका वाक्यों में प्रयोग करो:

उदाहरण :

सुनते-सुनते

राम गाना सुनते-सुनते सो गया।

१. बोलते-बोलते -

२. पढ़ते-पढ़ते -

३. लिखते-लिखते -

४. गाते-गाते -

५. खेलते-खेलते -

V. विलोम शब्दों के जोड़े मिलाओ :

१. लाभ	×	मृत्यु
२. बेतार	×	पास
३. खुलना	×	तार
४. जन्म	×	हानि
५. दूर	×	बंद होना

VI. समाचार पत्र जनसंचार माध्यम का एक प्रमुख अंग है। तुम कौन-कौन-से समाचार पत्रों के नाम जानते हो? उनकी एक सूची बनाओ :

	कन्नड	हिंदी	अंग्रेज़ी
१.	विजयवाणी	राजस्थान पत्रिका	डेक्कन हेराल्ड
२.	_____	_____	_____

३. _____
४. _____
५. _____

VII. दूरदर्शन में तुम बहुत सारे कार्यक्रम देखते हो। उसके बारे में तीन-चार वाक्य लिखो।

योग्यता विस्तार:

- कई ऐसी छोटी-छोटी पुस्तकें प्राप्त होती हैं, जिनमें इलेक्ट्रॉनिक चीज़ों का परिचय मिलता है। तुम अपने गुरुजनों से पूछो, पुस्तकें ले लो और मन लगाकर पढ़ो। अपनी जानकारी बढ़ाओ। कक्षा में इनकी चर्चा करो।





एक नन्हा टुकड़ा बादल का



-संकलित

बादल नादान बच्चे जैसे लगते हैं। बारिश करके लोक को सुखमय बनाते हैं। बादल की नज़र में संसार के सभी लोग समान हैं। बच्चे इस समानता का भाव सीख सकते हैं।



वह देखो नीले नभ पर,
ठुमक-ठुमककर चलता है,
एक भोले से बालक-सा,
रूठ-रूठ संभलता है,

एक नन्हा टुकड़ा बादल का।

हंस-गजों-सी चाल चले,
तो कभी थिरकाए पाँव,
पल भर में सूरज को ढक,
कर देता शीतल छाँव,

एक नन्हा टुकड़ा बादल का।

वह चाहे जिस ओर मुड़े,
राहें तो पहचानी हैं,
उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम,
सभी दिशा का ज्ञानी है,
एक नन्हा टुकड़ा बादल का।

अनगिन कोड़े सहता है,
चलती तेज हवाओं के,
फिर भी करता मनमानी,
बदले ढंग फिज़ाओं के,
एक नन्हा टुकड़ा बादल का।

कोने-कोने झूला झूले,
वह नभ पर पेंग बढ़ाए,
जब चाहें सूखा कर दे,
जब चाहें जल बरसाए,
एक नन्हा टुकड़ा बादल का।



शब्दार्थ :

नन्हा-छोटा, नादान; ठुमक-रुक रुककर, धीमी चाल; भोला-जिसमें
छल-कपट न हो, मुग्ध; संभलना-सावधान होना, ढकना-छिपाना,
छाँव- छाया, कोड़े-चाबुक, फिज़ा-वसंत काल, पेंग-झूलने के समय
झूले का एक ओर से दूसरी ओर जाना।

अभ्यास

I. इन प्रश्नों के उत्तर बताओ :

1. नीले नभ पर क्या चलता है?
2. बादल नीले नभ पर किस तरह चलता है?
3. बादल कैसे दिखता है?
4. बादल की चाल कैसी है?
5. शीतल छाँव कब होती है?
6. सूरज को कौन ढक लेता है?
7. किस पर हवा के कोड़े पड़ते हैं?
8. कोड़े खाकर भी बादल क्या करता है?

II. सोचो और लिखो :

1. बादल नीले नभ पर क्या-क्या करते हैं?
2. हंस-गजों-सा कौन चलता है और वह क्या-क्या करता है?
3. हवा से कोड़े खाकर बादल क्या करता है?

III. नमूने के अनुसार जोड़े बनाओ और समझो :

अ	आ
वह देखो	पेंग बढ़ाए
पल भर में	सूखा कर दे
उत्तर-दक्षिण	सहता है
अनगिन कोड़े	पूरब-पश्चिम
जब चाहें	सूरज को ढक
वह नभ पर	नीले नभ पर

IV. कविता से तुकवाले शब्दों को ढूँढ़कर लिखो :

जैसे : चलता - संभलता

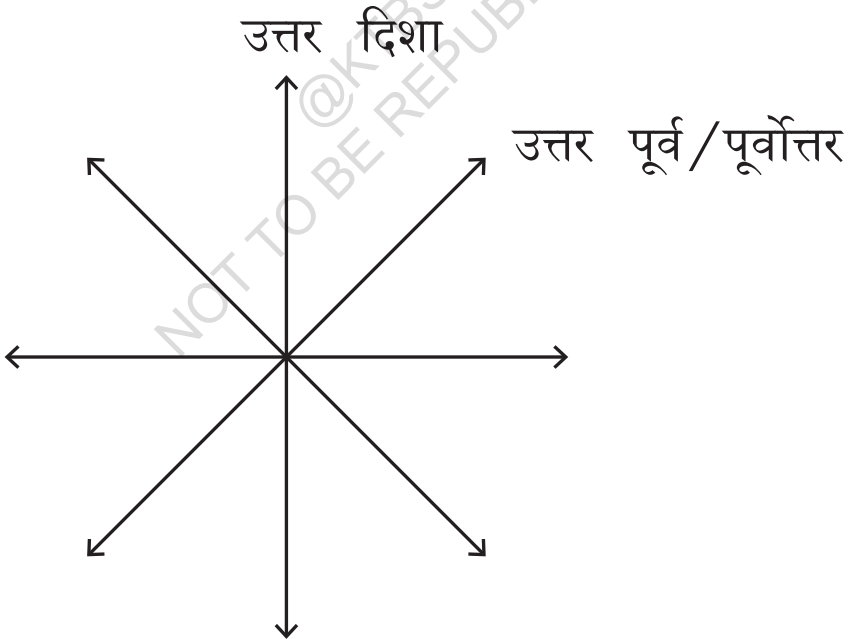
१. पाँव - _____

२. पहचानी - _____

३. हवाओं के - _____

४. बढ़ाए - _____

V. दिशाओं को सूचित करो :



VI. अलग-अलग आकार के बादलों के चित्र बनाओ :



योग्यता विस्तार :

- तुमने सुना होगा, 'सूरज' से संबंधित कविता होती है, पेड़-पौधों की कविता होती है। तुम अपने गुरुजन, माता-पिता, दादा-दादी से सूरज, पेड़-पौधे, नदी, सागर, पशु-पक्षी के बारे में कहानी सुनो। पढ़ने को पुस्तकें भी मिलती हैं, पढ़ लो। एक कहानी कक्षा में सुनाओ।

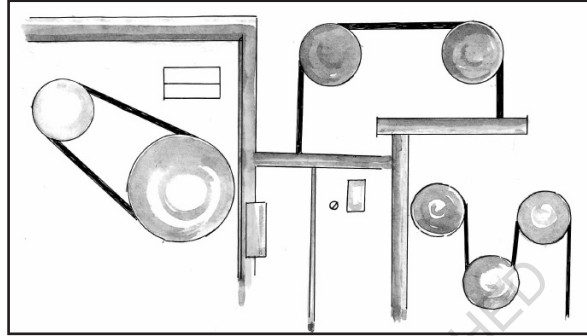




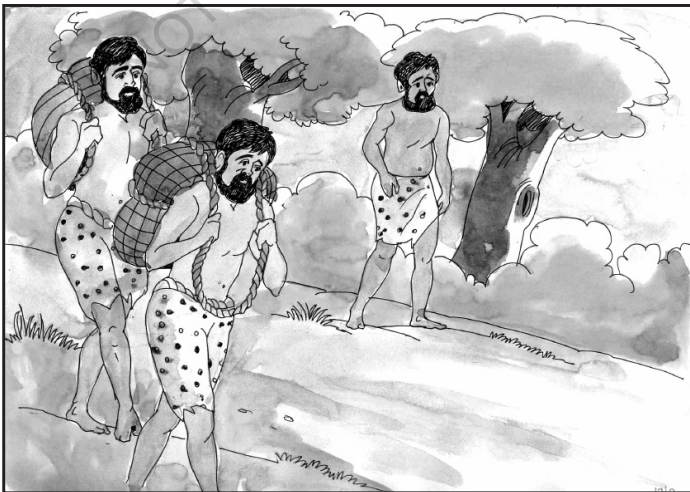
पहिए की आत्मकथा

- संकलित

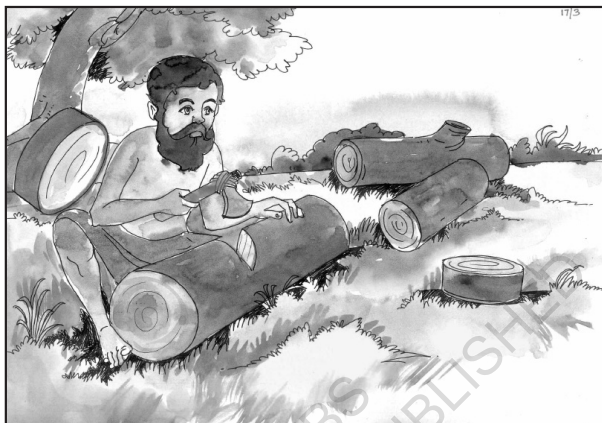
बच्चे पहिए की कहानी और उसके विकास के बारे में समझ सकते हैं।



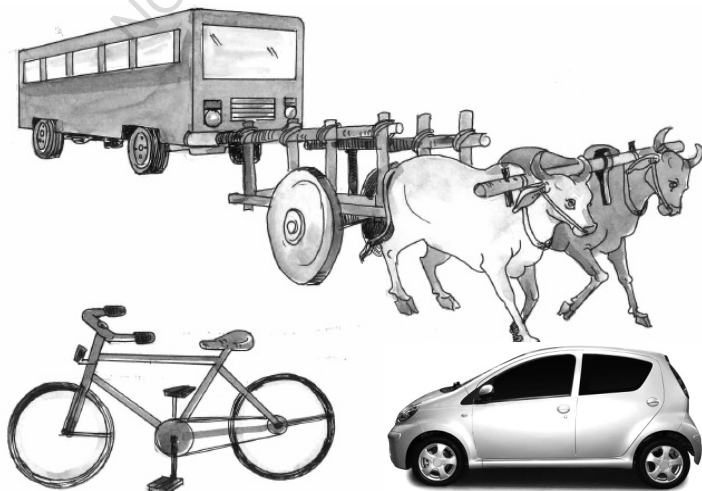
आप सभी मुझसे अच्छी तरह परिचित हैं। मेरा उपयोग लगभग सभी छोटी-बड़ी मशीनों में किया जाता है। घूमना ही मेरा काम है। क्या तुम मेरा नाम बता सकते हो? नहीं। चलो, मैं ही बता देता हूँ। मैं हूँ 'पहिया'। क्या तुम मेरे जन्म की कहानी जानते हो? आज मैं तुम्हें अपने जन्म की कहानी सुनाता हूँ। ज़रा ध्यान से सुनना।



मेरा जन्म आज से सैकड़ों-हज़ारों वर्ष पूर्व हुआ था। उस समय मनुष्य जंगल में रहता था तथा आदिमानव कहलाता था। आदिमानव एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा पैदल ही तय करता था। उसे भारी सामान लाने-ले जाने में बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था।



धीरे-धीरे आदिमानव ने अपने अनुभव से सीखा कि गोल वस्तुएँ आसानी से लुढ़कती हैं। उसने लकड़ी के लट्ठों को भी धरती पर सरलता से लुढ़कते हुए देखा। उसने अपनी बुद्धि का प्रयोग किया और लकड़ी के लट्ठों को काटकर मुझे जन्म दिया। यही है मेरे जन्म की संक्षिप्त कहानी।



धीरे-धीरे मनुष्य ने मेरे रूप व आकार में अपनी आवश्यकतानुसार परिवर्तन किए। मेरी सहायता से यातायात के विभिन्न साधनों को चलाया जाने लगा। बैलगाड़ी, घोड़ागाड़ी, साइकिल, रिक्शा, मोटर साइकिल, कार, बस, रेलगाड़ी, यहाँ तक कि हवाईजहाज तथा जलयानों में भी मेरा उपयोग विभिन्न तरीकों से किया जाता है। क्या मेरे बिना ये सब चल सकते हैं?



अधिकांश बड़ी-बड़ी तथा छोटी-छोटी मशीनों में भी मेरा उपयोग किया जाता है। जैसे-जैसे मेरे स्वरूप में परिवर्तन होता गया, वैसे-वैसे मनुष्य भी विकसित होता गया। जंगल में रहनेवाला मनुष्य सभ्य होता गया।

अब आप सोच रहे होंगे कि मैंने आपको यह नहीं बताया कि मेरा जन्म कहाँ और किस देश में हुआ? यह एक रहस्य है। इसका तो ठीक-ठीक ज्ञान मुझको भी नहीं। मैंने जबसे जन्म लिया है, तबसे

लगातार चलता ही जा रहा हूँ, घूमता ही जा रहा हूँ और मनुष्य भी लगातार घूम रहा है, आगे बढ़ रहा है, प्रगति कर रहा है।
ज़रा विचार कीजिए यदि मैं न होता तो क्या होता?



शब्दार्थ :

आसान-सुगम, बिना कठिनाई के ; परिवर्तन-बदलाव, रहस्य-गुप्त, राज़; मशीन-यंत्र, यातायात-परिवहन।

अभ्यास

I. इन प्रश्नों के उत्तर बताओ :

१. पहिए का उपयोग कहाँ किया जाता है?
२. जब मनुष्य जंगल में रहता था तब वह क्या कहलाता था?
३. कौन-सी वस्तुएँ आसानी से लुढ़कती हैं?

II. सोचो और लिखो:

१. पहिए का जन्म किस तरह हुआ?
२. पहिए के उपयोग के बारे में लिखो।
३. यदि पहिया नहीं होता तो क्या होता? अपने शब्दों में लिखो।
४. आदिमानव कहाँ रहता था?
५. छोटी-बड़ी मशीनों में किसका उपयोग करते हैं?
६. पहिए किससे बनते हैं?
७. पहिए का उपयोग करनेवाले यातायात के विभिन्न साधनों के नाम लिखो।

III. वर्ग पहेली में से ढूँढ़कर पाँच यातायात के विभिन्न साधनों के नाम लिखो:

बै	स	रि	क
ब	ल	गा	ड़ी
क्शा	का	ड़ा	र
रे	घो	ज	ह

१. _____
२. _____
३. _____
४. _____
५. _____

IV. नमूने के अनुसार विलोम शब्द जोड़ो:

- | | |
|----------|---------|
| १. अच्छा | अज्ञान |
| २. छोटा | कठिनता |
| ३. आसान | बुरा |
| ४. सरलता | बड़ा |
| ५. ज्ञान | मुश्किल |

V. नमूने के अनुसार बहुवचन रूप लिखो :

लकड़ी

लकड़ियाँ

- | | |
|----------|-------|
| १. कहानी | _____ |
| २. लड़की | _____ |
| ३. टोपी | _____ |

VI. सही शब्द चुनकर खाली जगह भरो :

(जंगल, आसानी, लकड़ी, मशीनों)

१. गोल वस्तुएँ _____ से लुढ़कती हैं।
२. मनुष्य _____में रहता था।
३. _____के लट्ठों को काटकर पहिए को जन्म दिया।
४. पहिए का उपयोग छोटी-बड़ी _____ में किया जाता है।

VII. इस गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखो:

चक्र का हमारे देश में बड़ा महत्व है। सूर्य भगवान के रथ का एक ही चक्र है। भगवान विष्णु के हाथ में चक्र है, उसे सुदर्शन चक्र कहते हैं। उसकी पूजा होती है। भगवान बुद्ध ने धर्मोपदेश देना शुरू किया। उसे हम धर्मचक्र प्रवर्तन कहते हैं। अनेक राजाओं पर जिसका शासन चक्र चलता है, उसे हम चक्रवर्ती कहते हैं। महाभारत में कीचड़ से रथ का चक्र निकालते समय कर्ण मारा गया। द्रोण ने चक्रव्यूह रचा था, जिसे सिर्फ अर्जुन तोड़ सकता था। हमारे राष्ट्रपिता के प्रिय चरखे में भी चक्र है। हमारे राष्ट्रध्वज में अशोक चक्र है। इस तरह भारत के इतिहास में चक्र का बड़ा महत्व है।

प्रश्न :

१. भगवान विष्णु के हाथ में जो चक्र है, उसका नाम क्या है?
२. हमारे राष्ट्रपिता की प्रिय चीज़ कौन-सी है?

३. हमारे राष्ट्रध्वज में कौन-सा चक्र है?
४. महाभारत में कर्ण को कब मारा गया?
५. द्रोण ने क्या रचा था? कौन इसे तोड़ सकता था?

योग्यता विस्तार:

- 'रोबोट' एक मशीन है। क्या तुम इसके बारे में जानते हो? एक 'रोबोट' का चित्र बनाओ।
- विविध प्रकार के वाहनों के चित्र इकट्ठा करो।
- पहिए का चित्र बनाकर उसमें रंग भरों।





बच्चों में साहस की कहानियों द्वारा द्वेष को मिटाकर पारस्परिक सहायता तथा एकता की भावना बढ़ाना इस पाठ का आशय है।

स्कूल के वार्षिक उत्सव के सिलसिले में हुए खेलों में रतन का प्रथम आना सभी को अच्छा लगा, लेकिन सखाराम ने तो जैसे रतन से दुश्मनी ही ठान ली। उसे रतन का प्रथम आना इसलिए बुरा लगा कि वह मुखिया का लड़का होकर खेल में बाजी हार गया और एक मामूली बुढ़िया का लड़का नाम कमा रहा है।

उस दिन बड़ी धूम-धाम से स्कूल में वार्षिक उत्सव मनाया गया। रतन को कई पुरस्कार मिले। लेकिन सखाराम उसको घूर-घूरकर देखता रहा। रतन के दोस्त चंदू ने कहा, “यार, आज यह सखाराम तुमसे चिढ़ा हुआ है।”

“नहीं, वह तो मेरा अच्छा मित्र है।”

“जो भी हो, लेकिन मुझे तो दाल में कुछ काला नज़र आता है” - चंदू ने कहा।

रतन ने चंदू की बात पर ध्यान नहीं दिया। जब समारोह समाप्त हो गया, तो रतन हाथों में पुरस्कार लेकर खुशी-खुशी घर की ओर चला।

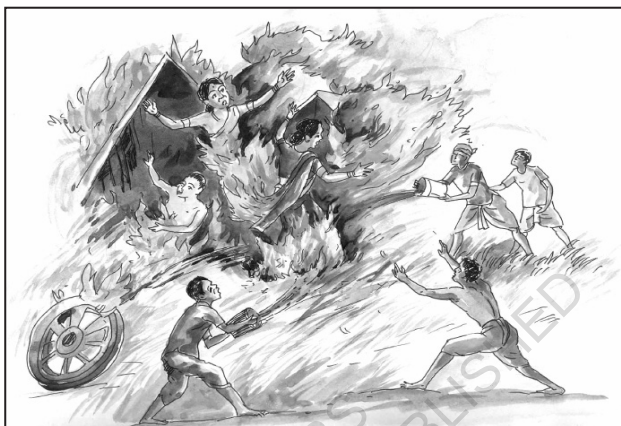




रतन अकेला चला जा रहा था। अभी वह आम के पेड़ के पास पहुँचा ही था कि सखाराम और उसके तीन साथी उस पर से कूदकर रतन के सामने आकर खड़े हो गए। रतन ने कहा, “क्यों सखाराम, तुम मुझसे नाराज़....” और उसके गाल पर तड़ाक से सखाराम का चांटा पड़ा। फिर तो लात-घूसों की खूब वर्षा हुई। इसके बाद पुरस्कार में मिली सारी चीज़ें लेकर वे लोग भाग गए। जाते-जाते सखाराम ने कहा, “कंगाल का बेटा, साहूकार बनने चला है.... थू...।” रतन अपनी फटी कमीज़ को ठीक करके धूल झाड़ते हुए उठा और चुपचाप घर चला आया। माँ ने उसका यह हाल देखा, तो लगी पूछताछ करने। रतन ने असली बात छिपाते हुए कहा, “आज स्कूल में दंगल हुआ था न, बस उसी में कमीज़ फट गई।”

लेकिन रतन सारी रात सो न सका। उसका बदन दर्द से बुरी तरह दुख रहा था। अचानक उसे कुछ शोर सुनाई दिया। वह चौकन्ना हुआ। ध्यान से सुना तो लगा कि कुछ गड़बड़ ज़रूर है। आधी रात को भला ऐसा क्या हो सकता है? वह तुरंत उठा और बाहर आया।

उसने देखा कि गाँव के मुखिया चौधरी हरभजन सिंह का मकान धू-धू जल रहा है। लोग अपने-अपने घरों से पानी की बालटियाँ लेकर जा रहे हैं। रतन ने एक पल की भी देर न की और अपनी बालटी उठाकर वह भी भागा।



सारा गाँव इकट्ठा हो गया था। बालटियों से पानी डाला जा रहा था और आग काबू में नहीं आ रही थी। आग रसोईघर की ओर से लगी थी और पूरे घर में फैलती जा रही थी। उसने देखा कि चौधरी हरभजन सिंह छाती पीट-पीटकर रो रहे हैं लेकिन कोई चौधरी की बात नहीं सुन रहा है। शोर और घबराहट से लोग एक-दूसरे की बात सुन ही न रहे थे। चौधरी कह रहे थे- “मेरी छोटी बिटिया अंदर रह गई है, कोई उसे निकाल लो।” भला आग की लपटों में कूदकर अपनी जान जोखिम में कौन डालता? पर रतन यह कैसे देख सकता था। वह जलते हुए घर की ओर बढ़ा। लोगों ने चिल्लाया, “मत जाओ रतन, आग बहुत तेजी से बढ़ रही है।” लेकिन रतन तो उन लपटों की रोशनी में बिजली की तरह चमका और लपटों में खो गया। लोग उसकी मूर्खता पर उसे भला-बुरा कहने लगे।

अब सभी को एक नयी चिंता हुई कि रतन वापस आता है या नहीं! किसीने कहा, “बेचारी बूढ़ी रो-रोकर मर जाएगी।”

“हाँ जी, वह तो उसके लिए सहारे की लाठी था। अब भला इन लपटों से बचकर क्या वापस आएगा।”

और तभी कोई चिल्लाया, “वह रहा रतन, वह रहा...।” रतन ने चौधरी की एक साल की बेटी को कपड़े में लपेटकर सीने से चिपका लिया था और दूसरे हाथ से अपना बचाव करता हुआ बाहर निकल आया। वह कई जगह मामूली तौर पर जल भी गया था। पसीने से उसका बुरा हाल हो रहा था। लेकिन फिर भी उसके चेहरे पर मुस्कान थी, क्योंकि चौधरी की बेटी को वह सही सलामत ले आया था।

चौधरी ने रतन को सीने से लगा लिया। रतन के साहस पर लोग उसे आँखें फाड़-फाड़कर देख रहे थे। किंतु सखाराम आँखें झुकाए सिर नीचा किए खड़ा था और रतन उसे समझा रहा था।



शब्दार्थ :

सिलसिला-घटना क्रम, धूम-धाम-आडंबर, उल्लासपूर्ण चहल-पहल; पुरस्कार-इनाम, घबराहट-भय, चौकन्ना-सतर्क, ठान लेना - निश्चय करना।

अभ्यास

I. इन प्रश्नों के उत्तर बताओ :

१. वार्षिक उत्सव के खेलों में कौन प्रथम आया ?
२. सखाराम रतन को घूर-घूरकर क्यों देखता रहा ?
३. किसका मकान जल रहा था ?
४. चौधरी हरभजन सिंह क्यों रो रहे थे ?
५. क्या सखाराम रतन का अच्छा दोस्त था ?
६. किसीके घर में आग लगी तो हमें क्या करना चाहिए ?

II. सोचो और लिखो:

१. सखाराम ने रतन के साथ क्या किया ?
२. रतन ने माँ से क्या कहा ?
३. आग किस तरफ फैल गयी ?
४. चौधरी ने रतन को सीने से लगा लिया। क्यों ?
५. अंत में सखाराम का हाल कैसा था ?
६. रतन का प्रथम आना सखाराम को बुरा क्यों लगा ?
७. आग कहाँ से लगी थी ?
८. लोगों ने रतन से क्या कहा ?
९. रतन ने हरभजन सिंह की बेटी की रक्षा कैसे की ?
१०. इस पाठ से क्या सीख मिलती है ?

शब्दार्थ और शब्द रचना:

III. समान अर्थवाले शब्दों का मिलान करो:

- | | |
|-------------|-------------|
| १. प्रिय | इनाम |
| २. पुरस्कार | प्यारा |
| ३. दुश्मन | नाराज़ होना |
| ४. चिढ़ना | आधार |
| ५. सहारा | शत्रु |

IV. सही शब्द चुनकर खाली जगह भरो:

(पुरस्कार, धूम-धाम, आग, रतन, मकान)

१. स्कूल में वार्षिक उत्सव _____ से मनाया गया।
२. रतन हाथों में _____ लेकर खुशी से घर की ओर चला।
३. चौधरी हरभजन सिंह का _____ धू-धू जल रहा है।
४. _____ काबू में नहीं आ रही थी।
५. चौधरी ने _____ को सीने से लगा लिया।

V. नमूने के अनुसार विलोम शब्द जोड़ो:

१. बड़ा	जीत
२. दुश्मन	बुरा
३. अच्छा	दोस्त
४. हार	छोटा
५. रोना	अन्दर
६. बाहर	हँसना

VI. पहचानो :

द्विरुक्ति शब्दों को ढूँढ़कर लिखो:

उदाहरण : खुशी-खुशी

१. पीट -

२. फाड़ -

३. रो -

४. धू -

VII. समझो और याद रखो:

१. परोपकार जीवन का मूल मंत्र है।
२. दूसरों की मदद करने से बढ़कर कोई पुण्य नहीं है।
३. सच्चरित्र व्यक्ति ही 'सादा जीवन उच्च विचार' में विश्वास रखता है।
४. समाज में समानता होनी चाहिए।
५. संतोष सभी धनों से श्रेष्ठ धन है।

योग्यता विस्तार :

- मान लो अपने घर के पास एक झोंपड़ी में आग लग गयी है, उसे बुझाने के लिए तुम्हें किन-किन चीज़ों की ज़रूरत होगी? सूची बनाओ।
- कोई आग से जल गया है, तो हमें क्या करना चाहिए? लिखो।
- क्या तुम अग्निशामक दल को जानते हो? कब इसका इस्तेमाल करते हैं? इसका फोन नंबर जानकर लिखो।
- आपको 'आग की लपटों में' पाठ में किसका गुण सबसे अच्छा लगा? तुम्हारे स्कूल में रतन जैसा दोस्त हो तो उसके बारे में पाँच वाक्य लिखो।





कबीर के दोहे



बच्चे इन दोहों के द्वारा गुरु, ज्ञान और संतोष के महत्व को समझ सकते हैं।

सतगुरु की महिमा अनंत, अनंत किया उपगार।
लोचन अनंत उघाड़िया, अनंत दिखावणहार ॥ १॥

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार की, पड़ा रहन दो म्यान ॥ २॥

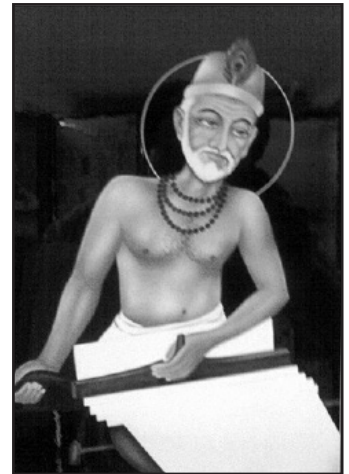
गोधन गजधन बाजिधन और रतनधन खान।
जब आवे सन्तोषधन, सब धन धूरि समान ॥ ३॥

यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खान।
सीस दिये जो गुरु मिलै, तो भी सस्ता जान ॥ ४॥



कवि परिचय :

हिंदी साहित्य के भक्तिकाल की निर्गुण काव्यधारा की ज्ञानमार्गी शाखा के प्रवर्तक संत कवि कबीरदास का जन्म सन् १३९८ ई. के लगभग हुआ था। उनका जन्मस्थान काशी बताया जाता है। कबीर रूढ़ियों के विरोधी थे। वे अंधविश्वासों, आड़ंबरों और पाखंडों को किंचित् मात्र भी सहन नहीं कर पाते थे। जीवन और जगत की यथार्थता को उन्होंने करीब से देखा था और उसका बेबाक चित्रण



किया। उनके जीवन का अधिकांश समय काशी में ही बीता। सन् १४९५ ई. के लगभग उस अद्भुत संत ने इस लोक से महाप्रयाण किया। उन्होंने हिंदू और मुसलमान दोनों को अंधविश्वास और बुराइयों से दूर रहने, आपस में मिल-जुलकर प्रेम से रहने की सीख दी है।

कबीर की रचनाएँ 'बीजक' नाम से संकलित हैं। उसके तीन भाग हैं-साखी, सबद और रमैनी।

शब्दार्थ :

लोचन-नयन, उघड़ना-प्रकट होना, खुलना; अनंत-जिसका अंत न हो, गज - हाथी, धूरि-धूल, जान-प्राण, बाजि-घोड़ा, म्यान-तलवार रखने का कोष।

अभ्यास

I. इन प्रश्नों के उत्तर बताओ :

१. किसकी महिमा अनंत है?
२. गुरु की महिमा का वर्णन किस दोहे में है?
३. साधु से क्या नहीं पूछना चाहिए?
४. साधु से क्या पूछना चाहिए?
५. किस धन के सामने सब धन धूरि समान है?

II. सोचो और लिखो:

१. सतगुरु के बारे में कवि क्या कहते हैं?
२. तलवार कहाँ रखी जाती है?
३. कौन-कौन-सा धन धूरि समान है?
४. कबीरदास जी के बारे में पाँच वाक्य लिखो।

III. दोहे की पंक्तियाँ पूरा करो :

१. जाति न पूछो _____।
_____ दो म्यान॥
२. गोधन गजधन _____।
_____ धूरि समान ॥

IV. इन शब्दों को जोड़कर लिखो :

- | | |
|----------------|--------------|
| १. सतगुरु की | साधु की |
| २. जाति न पूछो | महिमा अनंत |
| ३. गुरु | विष की बेलरी |
| ४. यह तन | अमृत की खान |

V. दोहे का सार अपने शब्दों में लिखो :

१. जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार की, पड़ा रहन दो म्यान॥
२. गोधन गजधन बाजिधन और रतनधन खान।
जब आवे सन्तोषधन, सब धन धूरि समान॥

VI. वाक्य में प्रयोग करो :

१. लोचन २. तलवार ३. संतोष ४. सस्ता

योग्यता विस्तार :

- कबीरदास जी के कुछ अन्य नीतिपरक दोहे याद करो और कक्षा में सुनाओ।





कृष्ण - सुदामा



-संकलित

इस एकांकी में बताया गया है कि मैत्री बड़ी चीज़ होती है। जहाँ दिल की सच्ची मैत्री बढ़ती है, वहाँ अमीरी-गरीबी का अंतर मिट जाता है। श्रीकृष्ण और सुदामा के बीच ऐसी ही गहरी मैत्री थी, जिसे आज भी लोग याद करते हैं। इस एकांकी के द्वारा बच्चे आपस में मैत्री-भावना बढ़ा सकते हैं।

(१)

(सुदामा का घर। सुदामा की पत्नी उनसे कुछ कह रही है।)

- पत्नी : अब मुझसे और नहीं सहा जाता। मैं बच्चों को भूख से तड़पता नहीं देख सकती। आपको द्वारिका जाना ही पड़ेगा। आपके मित्र श्रीकृष्ण हमारी सहायता अवश्य करेंगे।
- सुदामा : क्या मैं श्रीकृष्ण के दरवाज़े पर जाकर हाथ फैलाऊँ?
- पत्नी : मैं हाथ फैलाने के लिए नहीं कहती। आपके बिना कुछ कहे ही वे हमारी सहायता करेंगे। आखिर वे द्वारिका के राजा हैं।
- सुदामा : हूँ! राजा हैं! राजा भला मेरे जैसे दरिद्र को पहचानेगा?
- पत्नी : अवश्य, वे आपके सहपाठी और बाल-सखा जो ठहरे।
- सुदामा : मुझे कोई उनके पास तक जाने देगा?
- पत्नी : अवश्य, आप पहरदार को केवल अपना नाम भर बता देना।
- सुदामा : नाम बताने पर भी नहीं पहचाना तो?
- पत्नी : तो मैं समझूंगी कि हमारे भाग्य ही फूटे हैं।

सुदामा : इसीलिए कहता हूँ, जैसे चल रहा है, चलने दो।
पत्नी : अभी तक तो वैसा ही चल रहा था। लेकिन अब इससे भी बुरा चलेगा। (यह कहकर वह रो पड़ती है।)



सुदामा : अच्छा, रोओ मत, तुम जैसा कहती हो, मैं वही करूँगा। पर.....
पत्नी : (आँसू पोंछकर) पर क्या? जाओगे कैसे, यही, न?
सुदामा : हाँ, पहली बार मित्र के घर जा रहा हूँ। खाली हाथ जाना क्या अच्छा लगेगा?
पत्नी : हाँ, अच्छा तो नहीं लगेगा, पर (कुछ सोचकर) चिंता न करें, उसका भी प्रबंध हो जाएगा।
सुदामा : अच्छा, तुम सौगात का प्रबंध करो, मैं जाने की तैयारी करता हूँ। (पत्नी उन्हें चावल की पोटली लाकर देती है)

(२)

(द्वारिका नगरी में सुदामा एक आलीशान महल के सामने पहुँचते हैं। महल के सामने एक पहरदार है।)

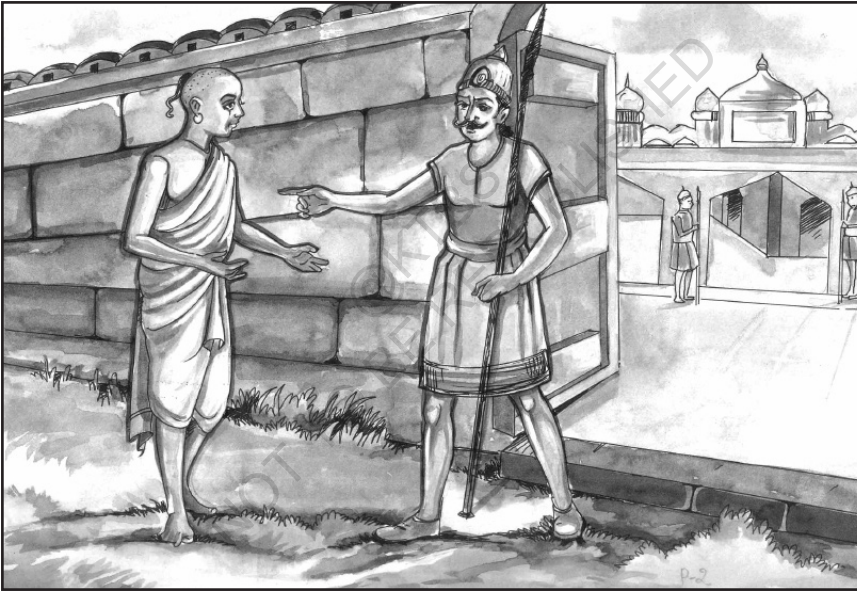
सुदामा : (पहरदार से) भैया! क्या यही महाराज श्रीकृष्ण का महल है?

पहरदार : हाँ, यही है। क्या बात है?

सुदामा : मुझे उनसे मिलना है।

पहरदार : आपका क्या नाम बताऊँ?

सुदामा : उनसे कहना कि आपका सहपाठी सुदामा आया है।



(पहरदार जाकर श्रीकृष्ण को सूचित करता है। सुदामा का नाम सुनते ही वह नंगे पाँव दौड़कर दरवाज़े पर आते हैं। सुदामा से लिपटकर वह उन्हें महल में ले जाते हैं।)

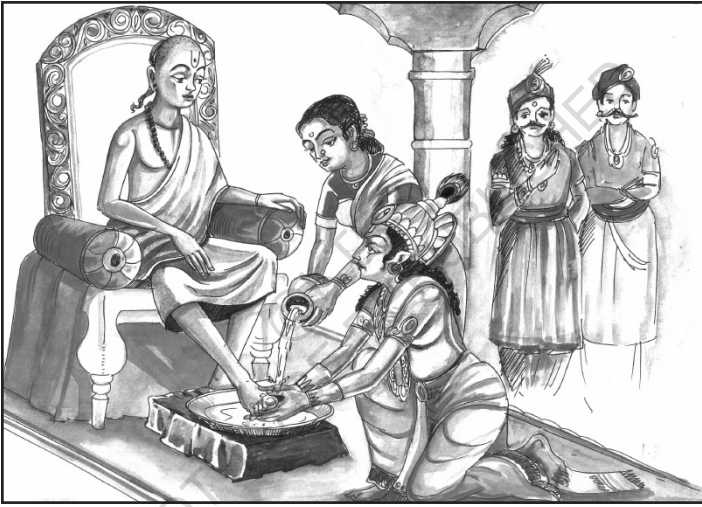
कृष्ण : (सिंहासन दिखाकर) मित्र सुदामा! यहाँ बैठो।

(सुदामा के संकोच करने पर भी कृष्ण उन्हें आदरपूर्वक सिंहासन पर बैठा देते हैं। तभी रुक्मणी एक परात में पानी लेकर आती है। कृष्ण सुदामा के पैर धोने बैठ जाते हैं। सब लोग आश्चर्य से देखते हैं।)

कृष्ण : (पैर धोते-धोते) मित्र! तुमने अपनी यह क्या दशा बना ली है? पैरों में इतने काँटे और बिवाइयाँ (आँखों में आँसू आ जाते हैं) मित्र ! तुम पहले ही यहाँ क्यों नहीं आ गए?

सुदामा : कई बार सोचा तो था, पर क्या बताऊँ मित्र.....

कृष्ण : तुम मेरे पास नहीं आए, इसके लिए मैं तुम्हें क्षमा नहीं करूँगा। (पैर पोंछते-पोंछते) अच्छा, यह तो बताओ, बच्चे और भाभी कुशल हैं?



सुदामा : सब प्रभु की कृपा है। तुम्हारी भाभी तुम्हें बहुत याद करती है।

कृष्ण : मुझे याद करती हैं भाभी। तब तो उन्होंने मेरे लिए कुछ भेजा होगा?

(कृष्ण की दृष्टि सुदामा की बगल में दबी पोटली पर पड़ती है।)

सुदामा : (संकोच से) भेजा तो है पर (कृष्ण उनकी बगल से पोटली झपट लेते हैं।)



कृष्ण : (पोटली खोलकर) अहा ! भाभी ने मेरे लिए चावल भेजे हैं।

(एक मुट्ठी चावल लेकर मुँह में डालकर) कितने स्वादिष्ट चावल हैं, मित्र! इतनी बढ़िया सौगात लाए हो और उसे छिपा रहे हो? पहले भी एक बार तुमने गुरु-पत्नी के चने मुझे नहीं दिए थे। (तभी रुक्मणी आ जाती है।)

रुक्मणी : (सुदामा से) आइए भैया, भोजन तैयार है। (सब जाते हैं।)

वाचक : सुदामा द्वारिका में कई दिन रुके रहे। जब-जब चलने को कहते, श्रीकृष्ण उन्हें रोक लेते। आखिर एक दिन उनसे विदा लेकर वे अपने गाँव को चल दिए। मार्ग में वे सोचते रहे कि श्रीकृष्ण ने आव-भगत और आदर-सत्कार तो बहुत किया, पर दिया कुछ भी नहीं। फिर सोचते, जब मैंने माँगा ही नहीं, तो उनका क्या दोष! किंतु जब वे अपने घर पहुँचे, तब उन्हें ज्ञात हुआ कि श्रीकृष्ण ने उन्हें बिना

माँगे ही सब कुछ दे दिया है। झोंपड़ी के स्थान पर सुंदर महल और दास-दासियाँ सभी कुछ।

इस प्रकार श्रीकृष्ण ने मित्र को माँगने के नाम पर अपमानित होने से भी बचा लिया और सब कुछ दे भी दिया।



शब्दार्थ :

सहपाठी-कक्षा में साथ पढ़नेवाला, बाल-सखा - बाल्य काल का मित्र, फूटा-बिगड़ा, टूटा, फटा; प्रबंध-उपाय, व्यवस्था; सौगात-भेंट, उपहार; पोटली-छोटी गठरी, आलीशान-भव्य, विशाल; बिवाई-तलवे का चमड़ा फटना, लिपटना-आलिंगन करना, परात-बड़ा थाल, आव-भगत- स्वागत-सत्कार।

अभ्यास

I. इन प्रश्नों के उत्तर बताओ :

१. कौन भूख से तड़प रहे थे?
२. सुदामा का सहपाठी कौन था?
३. कौन रो पड़ती है?
४. खाली हाथ कृष्ण से मिलने कौन नहीं जाना चाहता था?
५. “हमारा भाग्य फूटा है” - किसने, किससे कहा?
६. सुदामा की पत्नी ने कृष्ण को देने के लिए क्या दिया?

७. आलीशान महल किस नगरी में था?
८. सुदामा से मिलने कृष्ण कैसे दौड़ कर आये?
९. कृष्ण सुदामा की बगल से क्या झपट लेते हैं?
१०. सुदामा की झोंपड़ी की जगह अब क्या था?

II. सोचो और लिखो :

१. सुदामा की पत्नी क्यों रोती है? वह सुदामा को क्या सलाह देती है?
२. पैर धोते-धोते कृष्ण ने सुदामा से क्या कहा?
३. कृष्ण ने एक मुट्ठी चावल खाकर बड़े आनंद में सुदामा से क्या कहा?

III. नमूने के अनुसार विलोम शब्द लिखो:

उदाहरण : ऊँचा × नीचा

१. अमीरी ×

२. ज्ञात ×

३. सामने ×

४. बुरा ×

५. पास ×

६. बैठो ×

IV. उदाहरण के अनुसार बहुवचन शब्द बनाओ:

उदाहरण : काँटा - काँटे

१. लड़का -
२. आँख -
३. बच्चा -
४. याद -

V. पुल्लिंग और स्त्रीलिंग :

उदाहरण पढ़ो और लिखो :

उदा : लड़का - लड़की

१. भाई -
२. बच्चा -
३. माता -
४. बालक -

VI. किसने कहा? किससे कहा?

१. मुझे कोई उनके पास तक जाने देगा?
२. आपका क्या नाम बताऊँ?
३. मुझे याद करती हैं भाभी?

VII. वाक्य में प्रयोग करो :

१. सहायता
२. सहपाठी
३. प्रबंध करना
४. मुट्ठी

VIII. तुम्हारे घरों में भी कई बार अतिथि आते हैं। अब तुम बताओ कि तुम और परिवार के लोग उनका आदर-सत्कार कैसे करते हो?

१. _____

२. _____

३. _____

४. _____

५. _____

योग्यता विस्तार :

- तुम अपने मित्र की क्या-क्या सहायता करते हो? इसके बारे में दस वाक्य लिखो।
- पशु-पक्षी के साथ मानव की गहरी मैत्री होती है। बड़ों से पूछ-ताछ करो। इससे संबंधित छोटी-छोटी पुस्तकें मिलती हैं। पढ़ो और लिखो कि तुम्हें क्या लगता है।

